IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में सूचना एवम प्रौधोगिकी की भूमिका

[ छिन्दवाड़ा जिला के विशेष सन्दर्भ में ]

डा पूजा तिवारी
सह प्राध्यापक एवम विभागाध्यक्ष
समाजशास्त्र विभाग
शासकीय महाविद्यालय बिछुआ
जिला – छिन्दवाड़ा { म.प्र.}

शोध सार – महिला सशक्तिकरण से आशय समाज में महिलाओं के वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना से है ।
महिला सशक्तिकरण में सामाजिक ,आर्थिक ,शैक्षिणिक ,राजनैतिक आदि सभी क्षेत्र समाहित है । इससे महिलाएं शक्तिशाली बनती है जिससे वह अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वयं ले सकती है और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती हैं । इन सभी में सुचना और प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है ।
इस शोध पत्र के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत महिलाओं के सशक्तिकरण में जन संचार के साधनों ,सूचना प्रौधोगिकी की भूमिका का
वर्णनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है ।
इसके लिए छिन्द्वाडा जिले के बिछुआ के पांच ग्रामीण क्षेत्र क्रमश ग्राम गोनी
ग्राम खमरा ,ग्राम उल्हवादी ,ग्राम केकड़ा और ग्राम लोहारबतरी में रहने वाली
महिलाओं से साक्षत्कार अनुसूची के माध्यम से आंकड़े जमा करके उनका विश्लेषण किया गया है । इस शोध पत्र में ये सभी निम्न लिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखा है –
महिला सशक्तिकरण में महिलाओं के द्रष्टिकोण को स्वीकार करना ,उन्हें तलाशने का प्रयास करना और शिक्षा ,जागरूकता ,साक्षरता और प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं की स्थिति को उपर उठाना शामिल हैं ।

शब्द कुंजी – सशक्त ,जागरूकता ,तकनीक ,सूचना प्रौधोगिकी ,ग्रामीण ,महिला

इस शोध पत्र अध्ययन की जिज्ञासा के अंतर्गत यह जानना था की क्या ग्रामीण महिलाओं को महिला सशक्तिकरण के बारे में पता है ,क्या महिलाओं को सूचना प्रौधोगिकी के विषय में पता है ,क्या ग्रामीण महिला भी मानती है की जन संचार के साधनों से उनके सामाजिक जीवन पर कुछ असर पडा है ,क्या महिलाये इन कार्यक्रमों का कोई लाभ उठाती है ,क्या कुछ कुरुतियाँ इनके प्रभाव से दूर होती दिखाई देती है ।

भारत में पिछली कुछ सदी से महिलाओं की स्थितियों में कई बड़े बड़े बदलाओं देखने को मिले है द्यप्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिति से लेकर मध्य युगीन काल के

निम्न स्तरीय जीवन और साथ ही कई सुधारकों द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिए जाने तक भारत में महिलाओं का इतिहास बेहद गतिशील रहा है ।

आधुनिक भारत में महिलायें राष्ट्रपति ,प्रधानमंत्री ,लोकसभा अध्यक्ष ,प्रतिपक्ष की नेता और अन्य बड़े पदों पर आसीन हैं ।डा आंबेडकर ने कहा है की यदि किसी समाज की प्रगति के बारे में सही सही जानना है तो उस समाज की स्त्रियों की स्थिति के बारे में जानो ,समाज की मजबूती का अंदाज़ भी इसी से लगाया जा सकता है क्योकि महिलाये किसी भी समाज की आधी आबादी हैं ।

विश्व में नारी आन्दोलन की नीव 19 वीं शताब्दी में राखी गयी ,नारी आन्दोलन जब सामने आये तब से ही महिला सशक्तिकरण की अवधारणा दुनिया के साक्ष प्रमुखता से आई ।

पुरे विश्व में 8 मार्च को अन्तेर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है ,सशक्त होने का आशय केवल घर से निकल नौकरी करना भर नही हैं सशक्त होने का आशय यहाँ पर महिला के निर्णय ले सकने की क्षमता से एवम आर्थिक रूप से सशक्त होने से है ।नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की स्थितियों में अन्तर आज भी विधमान है ,पूरे देश में महिलाओं की स्थिति को सशक्त करने में इस तरह के मौजूद अंतर को पाटना अभी बेहद ज़रूरी हैं ।

आज का युग ऐसा युग है जिसमे महिलाओं को सविंधान में कई प्रकार के अधिकार दिए गये है ,आज महिलाये इस विकासशील भारत को विकसित बनाने के लिए अपना योगदान देती है परन्तु फिर भी उन्हें कई अलग अलग रूपों में

प्रताड़ित किया जाता है ।भारतीय समाज हमेशा से एक पुरूष प्रधान समाज रहा है ,यही वजह है की महिलाओं को शिक्षा और समानता के बुनियादी मानवाधिकारों से लगातार वंचित रखा गया है ।

सूचना और प्रौधोगिकी एक व्यापक क्षेत्र है ,जिसमे सूचना के संचार के लिए हर तरह की प्रौधोगिकी समाहित है ।

संचार के विभिन्न माध्यम रेडियो ,टी वी ,सेलफोन ,कम्पयूटर हार्ड वेयेर सॉफ्ट वेयेर ,विभिन्न सेवाओं और अनुप्रयोगों से सूचना के प्रसारण की सुविधा प्रदान करता है ।

महिला सश्क्तिकरण में सूचना और प्रौधोगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है खास तौर पर ग्रामीण तथा सुदुर क्षेत्र की महिलाओं को शासकीय योजनाओं की जानकारी संचार के विभिन्न साधनों के माध्यम से ही दी जा सकती है ।

की वर्ड – जागरूकता ,प्रौधोगिकी ,जनसंचार ,तकनिकी, प्रभाव ,सूचना

अध्ययन का उदेश्य – ग्रामीण महिलाओं को सूचना और प्रौधोगिकी के विषय में पता है की नहीं ,क्या जन संचार के साधनों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं

को सशक्त बनाया जा सकता है ,ग्रामीण महिलाओं को महिला सशक्तिकरण का असली मतलब मालूम है या नही साथ ही ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति के बारे में जानना भी इस अध्ययन का उदेश्य है ।

उपकल्पना

1.सूचना और प्रौधोगिकी के नए साधनों से ग्रमीण महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सकता है ।

2. गरीबी और बेरोज़गारी को कम करने में सूचना तकनीक से मदद मिल सकेगी ।

3.सामाजिक कुप्रथाएं ,रूढ़ी ,अन्धविश्वास को दूर करने में सूचना प्रौधोगिकी की सहायता मिल सकेगी ।

इस शोध पत्र में वर्णनात्मक प्रकार से अध्ययन किया गया है ।

समग्र एवम निदेर्शन ृ

अध्ययन का समग्र छिन्दवाड़ा जिला की बिछुआ तहसील के पांच गावं क्रमश ग्राम गोनी ,ग्राम गुमतारा ,ग्राम खामारपानी ,ग्राम लोहारबातरी ,ग्राम करेल

उपरोक्त गावं से उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति से 100 महिलाओं का चयन कर साक्षात्कार अनुसूची की मदद से अध्ययन पूरा किया गया है ।

विशेष – समस्त पांचो गावं में सरपंच के पद पर महिला सरपंच कार्यरत हैं जो महिला सशक्तिकरण का प्रतीक है ।

तालिका – 1

वैज्ञानिक अविष्कारों का ग्रामीण समाज पर पड़ने वाल प्रभाव की जानकारी

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी | 58 प्रतिशत सहमत | 42 प्रतिशत असहमत | 100 प्रतिशत |
| 2 | आर्थिक निर्भरता में सहायक | 70 प्रतिशत सहमत | 30 प्रतिशत असहमत | 100 प्रतिशत |
| 3 | महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार | 80 प्रतिशत सहमत | 20 प्रतिशत असहमत | 100 प्रतिशत |
| 4 | अंधविश्वास ,कुप्रथाओ को दूर करने में सहायक | 55 प्रतिशत सहमत | 45 प्रतिशत असहमत | 100 प्रतिशत |
| 5 | कृषि कार्य ,कृषक समाज में परिवर्तन | 65 प्रतिशत सहमत | 35 प्रतिशत असहमत | 100 प्रतिशत |

तालिका – 2

ग्रामीण महिला सशक्तिकरण पर जन संचार साधनों के प्रभाव की जानकारी

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | महिलाओं की वैचारिकी में परिवर्तन | 85 प्रतिशत सहमत | 15 प्रतिशत असहमत | 100 प्रतिशत |
| 2 | नवीन योजनाओं का ज्ञान | 75 प्रतिशत सहमत | 25 प्रतिशत असहमत | 100 प्रतिशत |
| 3 | जन संचार के साधनों की जानकारी | 86 प्रतिशत सहमत | 14 प्रतिशत असहमत | 100 प्रतिशत |
| 4 | नवीन कृषि तकनिकी का ज्ञान | 75 प्रतिशत सहमत | 25 प्रतिशत असहमत | 100 प्रतिशत |
| 5 | महिलाओं के सशक्तिकरण में सुचना और प्रौधोगिकी की भूमिका सकारात्मक है की नहीं | 80 प्रतिशत सहमत | 20 प्रतिशत असहमत | 100 प्रतिशत |

इस प्रकार उपरोक्त तालिकाओं से पता लगता है की आज ग्रामीण

समाज में सुचना और प्रौधोगिकी के कारण अधिकांश परिवर्तन सकारात्मक रूप से हुए है ,आज ग्रामीण महिलाओं को भी संचार साधनों की जानकारी है और कई महिलाएं तो सोशल मीडिया पर सक्रिय भी है ,अधिकांश महिलाओं ने
माना की वर्तमान समय में महिलाये आत्मनिर्भर हुई है और वो स्वयम को सशक्त महसूस करती है ,आज घरों में महिलाओं की मर्ज़ी भी पूछी जा रही है और कई बड़े निर्णय महिलाये ले रही है ,अध्ययन क्षेत्र के चयनित पांचो गावं में
सरपंच पद पर महिलाये ही आसीन है जो महिला सशक्तिकरण का उतम उदहारण है ।

इस प्रकार खा जा सकता है की ग्रामीण महिलाये सामाजिक ,आर्थिक ,राजनैतिक स्तर पर सशक्त हुई है ,इसके पीछे सुचना और तकनिकी ने विशेष भूमिका निभाई है ।

निष्कर्ष -आज गावों में संचार सुविधाओं के कारण ग्रामीण महिलाएं भी आसानी से इन्टरनेट का उपयोग करने में सक्षम हैं इससे उनका आर्थिक पक्ष भी मज़बूत हो रहा है दूसरी ओर ग्रामीण समाज में कृषि से लेकर सामाजिक संस्थाओं में भी नयापन दिखाई दे रहा है ,आज़ादी के बाद सबसे बड़ा परिवर्तन और विकास संचार व्यवस्था में हुआ है ,संचार क्रांति आने से गाँव में रोज़गार के अवसर में वृधि हुई है आज लगभग समस्त महिलाओं के पास मोबाइल है ,घरों में टीवी है घर में आवागमन के साधन है ,आज ग्रामीण महिलाओं की शैक्षिणिक और आर्थिक उन्नति भी हो रही है और उन्हें रोज़गार भी मिल रहा है जिसके पीछे
सूचना और प्रौधोगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है ।

संदर्भ सूची -

1. आहूजा राम ,भारतीय सामाजिक व्यवस्था,रावत पब्लिकेशन
जयपुर
2. शर्मा सुभाष -भारतीय महिलाएं , दशा एवम दिशा
3 . कुमारी स्वाति -महिला सशक्तिकरण में सूचना प्रौधोगिकी की भूमिका ;एक समाजशास्त्रीय अध्ययन , IJRAR, APRIL –JUNE 2018
4. शर्मा ,जी .एल .,सामाजिक मुद्दे ,रावत पब्लिकेशन जयपुर